Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 35

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

3 नवम्बर 2016 ई 2 सफर 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अल्लाह पर पूरा ईमान तभी हो सकता है कि उसके रसूलूं पर ईमान लाए। कारण यह कि वह उसकी विशेषताओं के सूचक हैं ।

अल्लाह तआला की विशेषताएं जैसे सनातन हैं वैसे अनन्त भी हैं और उन्हें निरीक्षण के रूप में दिखलाने वाले केवल अंबिया अलैहिमुस्सलाम हैं।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रश्न (8) हालांकि हमारा ईमान है कि केवल शुष्क तौहीद मुक्ति की बुनियाद नहीं हो सकती और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से अलग होकर कोई कर्म करना मनुष्य को नाजी (मुक्ति वाला) नहीं बना सकता। लेकिन दिल की संतुष्टि के लिए निवेदन हैं कि अब्दुल हकीम ख़ान ने जो आयात लिखी हैं उनका क्या मतलब है। जैसे

اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَالَّذِیۡنَ ہَادُوۡا وَالنَّصٰرٰی وَالصّٰبِـُٔوۡنَ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰہِ وَالۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَہُمۡ اَجۡرُہُمۡ عِنۡدَ رَبِّہِمۡ

और जैसा कि यह आयत

بَلٰی مَنۡ اَسۡلَمَ وَجۡہَہٗ لِلّٰہِ وَہُوَ مُحۡسِنٌ فَلَہٗۤ اَجۡرُہٗ عِنۡدَ رَبِّہٖ

और जैसा कि यह आयत

تَعَالَوۡا اِلٰی کَلِمَۃٍ سَوَآءٍۢ بَیۡنَنَا وَبَیۡنَکُمۡ اَلَّا نَعۡبُدَ اِلَّا اللّٰہَ وَلَا نُشۡرِکَ بِہٖ شَیۡـًٔا وَّلَا یَتَّخِذَ بَعۡضُنَا بَعۡضًا اَرۡبَابًا مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ

उत्तर: स्पष्ट है कि कुरआन शरीफ में इन आयतों के उल्लेख से यह मतलब नहीं है कि बिना उस के जो रसूल पर ईमान लाया जाए मुक्ति हो सकती है बल्कि इसका मतलब यह है कि बिना इसके कि ख़ुदा वाहिद शरिक और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया जाए मुक्ति नहीं हो सकती और अल्लाह पर पूरा ईमान तभी हो सकता है कि उसके रसूलूं पर ईमान लाए। कारण यह कि वह उसकी विशेषताओं के सूचक हैं और किसी चीज का अस्तित्व बिना उसकी विशेषताओं के अस्तित्व के सबूत तक नहीं पहुंचता। इसलिए अल्लाह तआला के गुणों के ज्ञान के बिना अल्लाह तआला की माअरफत ख़राब रह जाती है क्योंकि जैसे यह गुण अल्लाह कि वह बोलता है सुनता है छिपी बातों को जानता है। दया या अज़ाब करने पर शक्ति रखता है रसूल के माध्यम के बिना उनका पता कैसे लग सकता है कैसे उन पर विश्वास आ सकता है और अगर यह गुण निरीक्षण के रंग में साबित न हों तो ख़ुदा तआला का अस्तित्व प्रमाणित नहीं होता तो इस मामले में पर विश्वास के क्या अर्थ होंगे और जो व्यक्ति ख़ुदा पर विश्वास लाए अवश्य है कि उसके विशेषताओं पर भी विश्वास लाए और यह ईमान उसे नबियों पर विश्वास के लिए मजबूर करेगा। क्योंकि जैसे ख़ुदा का बात करना और बोलना बिना सबूत ख़ुदा के बोलने के कैसे समझ आ सकता है और इस कलाम को प्रस्तुत करने वाले इसके सबूत के साथ केवल नबी हैं।

फिर यह भी स्पष्ट है कि कुरआन शरीफ में दो प्रकार की आयतें हैं एक मुहकमात और बय्यनात जैसा कि यह आयत

اِنَّ الَّذِیۡنَ یَکۡفُرُوۡنَ بِاللّٰہِ وَرُسُلِہٖ وَیُرِیۡدُوۡنَ اَنۡ یُّفَرِّقُوۡا بَیۡنَ اللّٰہِ وَرُسُلِہٖ وَیَقُوۡلُوۡنَ نُؤۡمِنُ بِبَعۡضٍ وَّنَکۡفُرُ بِبَعۡضٍ ۙ وَّیُرِیۡدُوۡنَ اَنۡ یَّتَّخِذُوۡا بَیۡنَ ذٰلِکَ سَبِیۡلًا ۙ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡکٰفِرُوۡنَ حَقًّا ۚ وَاَعۡتَدۡنَا لِلۡکٰفِرِیۡنَ عَذَابًا مُّہِیۡنًا

अर्थात जो लोग ऐसा ईमान लाना नहीं चाहते जो ख़ुदा पर भी विश्वास लाएं और उनके रसूलों पर भी और चाहते हैं कि ख़ुदा को उस के रसूलों से अलग कर दें और कहते हैं कि कुछ पर हम ईमान लाते हैं और कुछ पर नहीं अर्थात ख़ुदा पर ईमान लाते हैं और रसूलों पर नहीं कुछ रसूलों पर ईमान लाते हैं और कुछ पर नहीं और इरादा है करते हैं कि मध्यम राह धारण करें यही लोग स्पष्ट रूप से काफिर और पक्के काफिर हैं और हम काफिरों के लिए अपमानित करने वाला अज़ाब तैयार किया है। यह तो आयतें मुहकामत हैं जिनका हम एक बड़ा विस्तार अभी लिख चुके हैं।

अन्य प्रकार की आयतें मुतशाबेहात हैं जिनके अर्थ सूक्ष्म होते हैं और जो लोग ज्ञान में सुदृढ़ होते हैं उन लोगों को उनका ज्ञान दिया जाता है और जिन लोगों के दिलों में पाखंड की बीमारी है वह मुहकमात आयतों की कुछ परवाह नहीं करते और मुतशाबेहात का अनुकरण करते हैं और मुहकमात की निशानी यह है कि मुहकमात आयतें ख़ुदा तआला के कलाम में प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं और ख़ुदा तआला का कलाम उनसे भरा हुआ होता है और उनके अर्थ खुले खुले होते हैं और उनके न मानने से उपद्रव अनिवार्य है जैसे इसी जगह देख लो कि जो व्यक्ति केवल ख़ुदा तआला पर ईमान लाता है और उनके रसूलों पर ईमान नहीं लाता, उसे ख़ुदा तआला के गुणों से इनकार करना पड़ता है। जैसे हमारे ज़माने में ब्रह्मो जो एक नया संप्रदाय है जो दावा करते हैं कि हम ख़ुदा को मानते हैं मगर नबियों को नहीं मानते वह ख़ुदा तआला के कलाम से इनकार करते हैं और स्पष्ट है कि अगर ख़ुदा तआला सुनता है तो बोलता भी है। तो अगर उसका बोलना प्रमाणित नहीं, तो सुनना भी प्रमाणित नहीं। इस तरह से ऐसे लोग अल्लाह तआला के गुणों से इनकार कर नास्तिकों के रंग में हो जाते हैं और अल्लाह तआला की विशेषताएं जैसे सनातन हैं वैसे अनन्त भी हैं और उन्हें निरीक्षण के रूप में दिखलाने वाले केवल अंबिया अलैहिमुस्सलाम हैं और अल्लाह तआला की विशेषताओं को नकारना अल्लाह तआला की हस्ती को नकारना पर अनिवार्य है। इस शोध से प्रमाणित है कि अल्लाह तआला पर ईमान लाने के लिए अंबिया अलैहिमुस्सलाम पर ईमान लाना कितना ज़रूरी है कि उनके बिना ख़ुदा तआला पर ईमान लाना घटिया और असम्पूर्ण रह जाता है और साथ ही मुहकमात आयतों की एक यह भी निशानी है कि उन की गवाहियां न केवल आयतों की प्रचुरता से बल्कि व्यावहारिक रूप से भी मिलती है। अर्थात ख़ुदा के नबियों की निरन्तर गवाहियां उनके विषय में पाई जाती है। जैसा कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के कलाम पवित्र कुरआन और अन्य नबियों की किताबों को देखेगा। उसे मालूम होगा कि नबियों की किताबों में जिस तरह

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

मैं इस समय आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म के अनुसार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सलाम कहता हूँ।

हज़रत मौलवी ग़ुलाम नबी साहब ख़ूशाबी एक मृदुभाषी, परहेज़गार और बहुत बड़े विद्वान थे। लुधियाना के मुबाहसा के कारण हुज़ूर की मुख़ालिफ़त अपने चरमसीमा पर थी, वह भी इस मुख़ालिफ़त की धारा में बह गए और हयाते मसीह के संबंध में तक़रीरें करने लगे। हज़ारों लोग उनकी तक़रीरें सुनने के लिए एकत्रित हुए और हज़रत मिर्ज़ा साहब के ख़िलाफ़ अत्यधिक नफ़रत फैलती गई। एक दिन उसी मुहल्ला में उनकी तक़रीर हुई जहाँ हुज़ूर ठहरे थे। तक़रीर के बाद मौलवी साहिब हज़ारों लोगों के जुलूस की भीड़ के साथ चलने लगे। ठीक हुज़ूर के मकान के सामने उनकी अचानक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हो गयी, उसके बाद जो कुछ हुआ उसको विस्तारपूर्वक हज़रत साहिबज़ादा पीर सिराजुल हक़ साहब नुमानी (र) की ज़बानी सुनिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अस्सलामो अलैकुम कह कर मुलाक़ात के लिए हाथ बढ़ाया और मौलवी साहिब ने भी जवाब में वअलैकुम अस्सलाम कहकर हाथ मिलाया। ख़ुदा जाने इस मुलाक़ात में कैसी बिजली और चुम्बकीय ताक़त एवं रूहानी आकर्षण था कि यदुल्लाह (तात्पर्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ) से हाथ मिलाते ही मौलवी साहब ऐसे बेसुध हुए कि कुछ कह न सके और सीधे हाथ में हाथ दिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ मकान के मर्दाना हिस्से में चले आए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सामने अदब से बैठ गए और बाहर मौलवी तथा उनकी नसीहत सुनने वाले आश्चर्य से खड़े होकर आपस में बातचीत करने लगे ।

एक - अरे मियाँ यह क्या हुआ ? और मौलवी साहिब ने यह क्या बेवकूफ़ी की, कि मिर्ज़ा साहब के साथ-साथ चले गए ?

दूसरा - मिर्ज़ा जादूगर है। पता नहीं कि क्या जादू कर दिया होगा, साथ जाना मुनासिब नहीं था।

तीसरा - मौलवी साहब दब गए। मिर्ज़ा का रौब बड़ा है, रौब में आ गए।

चौथा - अजी ! मिर्ज़ा साहिब ने जो इतना बड़ा दावा किया है, मिर्ज़ा ख़ाली नहीं है, क्या यह दावा ऐसे वैसे का है ?

पाँचवा - बात तो यह मालूम होती है कि मिर्ज़ा रुपयों वाला है और मौलवी लालची होते हैं। मिर्ज़ा ने कुछ लालच दे दिया होगा ।

और कुछ ने कहा - मौलवी साहब आलिम फाज़िल (विद्वान) हैं। मिर्ज़ा को समझाने और नसीहत करने गए हैं। मिर्ज़ा को समझा कर और तौबा करवा कर वापस आवेंगे, दूसरों ने कहा - यह बात ठीक है, ऐसा मौका मुलाक़ात और नसीहत का बार-बार नहीं मिलता। अब यह मौका मिल गया, मिर्ज़ा साहब को तौबा करा कर ही छोड़ेंगे और आम लोग कहने लगे - मौलवी फंस गया, फंस गया। ख़्वाह लालच में हो या इल्म (ज्ञान) में, या किसी और सूरत से। मिर्ज़ा बड़ा चालाक और ज्ञान वाला है। वह मौलवियों के तरीकों में नहीं आता।

मौलवी : (इकट्ठे होकर) मौलवी साहब मिर्ज़ा की ख़बर लेने गये हैं, देखना तो सही, मिर्ज़ा की कैसी गत बनती है। मौलवी मिर्ज़ा से इल्म (ज्ञान) में कम नहीं है। लालची नहीं है, रोज़गार वाला है, ख़ुदा और रसूल को पहचानता है। फ़ाज़िल (विद्वान) है। मिर्ज़ा को नीचा दिखाकर आएगा और इसके अतिरिक्त जो कुछ किसी के मुँह में आता था कहता था। इधर ख़ुदा की क़ुदरत का तमाशा और ख़ुदाई इरादे में क्या था ? जब मौलवी ग़ुलाम नबी साहिब मकान के अन्दर गए तो चुपचाप बैठ गए।

मौलवी साहब : हज़रत ! आप ने वफ़ाते मसीह (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु) का मसला कहाँ से लिया है ?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम - क़ुर्आन शरीफ़ से और हदीस शरीफ़ से और ख़ुदाई (परहेज़गार) उलमा (विद्वानों) के अ़क्वाल (वृत्तान्तों) से ।

मौलवी साहब - कोई आयत क़ुर्आन मजीद में वफ़ाते मसीह के बारे में हो तो बतलाइए ?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम - लो यह क़ुर्आन शरीफ़ रखा है। आप ने क़ुर्आन शरीफ़ दो जगह से खोलकर और काग़ज़ का निशान रखकर मौलवी साहिब के हाथ में दे दिया। पहला निशान सूर: आले इमरान की आयत (या ईसा इन्नी मुतवफ़्फ़ीका) पर, तथा दूसरा सूर: माइद: की आयत (फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्त अन्तर्रक़ीबा अलैहिम्) पर था । मौलवी साहब दोनों जगहों की दोनों आयतें देखकर हैरान और दंग रह गए और कहने लगे (युवफ़्फ़ीहिम उजूरहुम) भी तो क़ुर्आन शरीफ़ में है। इसके क्या अर्थ होंगे ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ये आयतें जो हमने पेश की हैं इनके और अर्थ हैं और जो आयतें आपने पेश की हैं उनके दूसरे अर्थ हैं। बात यह है कि यह और बाब से है और वह और बाब से है ज़रा विचार करें और सोचें।

मौलवी साहब - दो चार मिनट सोचकर कहने लगे, माफ़ फ़रमाइए। मेरी ग़ल्ती थी जो आपने कहा वह सही है। क़ुर्आन मजीद आपके साथ है हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम ने फ़र्माया जब क़ुर्आन मजीद हमारे साथ है तो आप किसके साथ हैं ?

मौलवी साहब रो पड़े और आँखों से आँसू बहने लगे और हिचकी बँध गई, और कहा कि ये ख़ताकार और गुनहगार (दोषी) भी हुज़ूर के साथ है। इसके बाद मौलवी साहब रोते रहे और अदब से आपके सामने बैठे रहे।

जब देर हो गयी तो लोगों ने फ़रियाद करनी शुरू कर दी और आवाज़ देने लगे कि जनाब मौलवी साहब बाहर तशरीफ़ लाइए। मौलवी साहब ने उनकी किसी बात का जवाब न दिया। जब अधिक देर हो गयी तो वे लोग बहुत चिल्लाए तब मौलवी साहब ने कहला भेजा कि तुम जाओ, मैंने तो हक़ (सच) देख लिया और पा लिया। अब मेरा तुम से कुछ काम नहीं है, तुम अगर चाहो और अपना ईमान सलामत रखना चाहते हो तो आ जाओ और अल्लाह तआला से क्षमा (माफ़ी) मांग कर सफल हो जाओ और इमाम को मान लो। मैं उस सच्चे इमाम से किस तरह अलग हो सकता हूँ जो अल्लाह तआला का मौऊद और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मौऊद है। जिसको आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सलाम भेजा। अत: वह हदीस यह है -

मन अद्रका मिनकुम ईसा इब्ने मर्यम, फ़लयक़्रउहू मिन्निस्सलाम

मौलवी साहब ने यह हदीस पढ़कर हज़रत मसीह मौऊद की तरफ़ मुँह किया और दोबारा बड़े ज़ोर से पढ़कर कहा कि मैं इस समय आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म के अनुसार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सलाम कहता हूँ और मैं भी अपनी तरफ़ से उस हैसियत का,जो सलाम कहने वाले ने सलाम कहा, और जिसको जिस हैसियत से कहा गया, सलाम कहता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उस समय एक अजीब लहजे और स्वर से वा अलैकुम अस्सलाम कहा कि दिल सुनने की ताब न ला सका और मौलवी साहिब हलाल किए हुए मुर्ग की तरह तड़पने लगे। उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चेहरे का भी और ही रंग था, जिसको मैं पूर्णत: तहरीर नहीं कर सकता।

उपस्थित और श्रोतागण का खुशी से एक अजीब हाल था। फिर मौलवी साहिब ने कहा, ''सूफी सन्तों और उम्मत के उलमा ने सलाम कहला भेजा और उसके इन्तेज़ार में दुनिया से चल बसे। आज अल्लाह तआला का नविश्ता (लिखा हुआ) और वादा पूरा हुआ। यह ग़ुलाम नबी उसको कैसे छोड़े। यह मसीह मौऊद हैं, और यही इमाम महदी मौऊद हैं। यही हैं वह, यही हैं वह और मसीह इब्ने मर्यम मूसवी (अर्थात् जो हज़रत मूसा(अ) की उम्मत में आए थे) का देहान्त हो गया, वह नि:सन्देह मृत्यु पा चुके हैं, वह दोबारा नहीं आयेंगे। आने वाले आ गए, आ गए, नि:संदेह आ गए। अब तुम जाओ या मेरी तरह से आप (अर्थात् हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) के मुबारक क़दमों में गिरो ताकि निजात (मुक्ति) पाओ। अल्लाह तआला तुम से राज़ी हो और उसका रसूल तुम से खुश हो।"

दरवाज़ें पर प्रतीक्षा कर रहे लोगों को जब मौलवी साहिब का यह पैग़ाम पहुँचा तो, क्या मौलवी, मुल्ला और तमाम् लोगों की ज़बान से काफ़िर-काफ़िर का शोर उठा और गालियों की बौछार करते हुए इधर-उधर बिखर गए और बुरा भला कहते हुए इधर-उधर गलियों में भाग गए। जो कहते थे कि मिर्ज़ा जादूगर है, उनकी बात ऊँची हो गई ।

(हयाते तैयबा पृ. 89-91)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

आज से मजलिस अंसारुल्लाह यू.के (U.K) और लजना इमाअल्लाह का इज्तिमा शुरू हो रहा है। हमारे इज्तिमाओं की मूल भावना यह है जिसके लिए कोशिश होनी चाहिए कि अल्लाह तआला से संबन्ध और आपस में प्रेम व भाईचारा में बढ़ा जाए। बौद्धिक कार्यक्रम और मुकाबले इस भावना के साथ होने चाहिए कि हम ने इन बातों से कुछ सीख कर अपने जीवन का हिस्सा बनाना है। कुछ खेलों के भी कार्यक्रम होते हैं तो इसलिए कि अल्लाह तआला के अधिकारों और बन्दों के अधिकारों को अदा करने के लिए सेहत वाला शरीर भी ज़रूरी है वरना न ही अंसारुल्लाह की खेलकूद की उम्र है और न ही बाईस तीस साल की उम्र के बाद प्रायः औरतें खेलों में कोई अधिक शौक रखती हैं।

अंसारुल्लाह और लजना इमाउल्लाह और नासरातुल अहमदिया की ज़िम्मेदारियों का सार इन के इस अहद में वर्णित है जिसे वे अपने इज्लासों में दुहराते हैं। इन अहदों से सम्बन्धित अंसारुल्लाह, लजना इमाउल्लाह, और नासरातुल अहमदिया को विशेष उपदेश।

जामिया अहमदिया के एक बहुत प्यारे छात्र मज़हर अहसन(स्वर्गीय) का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा हाज़िर जो कैंसर से ठीक होने के बाद सीने की इंफेकशन के कारण से वफात पा गए।
मरहूम की विभिन्न विशेषताओं का वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 30 सितम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

आज से मजलिस अंसारुल्लाह यू.के (U.K) और लजना इमाअल्लाह का इज्तिमा शुरू हो रहा है। हमारे इज्तिमाओं की मूल भावना यह है जिसके लिए कोशिश होनी चाहिए कि अल्लाह तआला से संबन्ध और आपस में प्रेम व भाईचारा में बढ़ा जाए। बौद्धिक कार्यक्रम और मुकाबले इस भावना के साथ होने चाहिए कि हम ने इन बातों से कुछ सीख कर अपने जीवन का हिस्सा बनाना है। कुछ खेलों के भी कार्यक्रम होते हैं तो इसलिए कि अल्लाह तआला के अधिकारों और बन्दों के अधिकारों को अदा करने के लिए सेहत वाला शरीर भी ज़रूरी है वरना न ही अंसारुल्लाह की खेलकूद की उम्र है और न ही बाईस तीस साल की उम्र के बाद प्रायः औरतें खेलों में कोई अधिक शौक रखती हैं। इसलिए व्यायाम प्रतियोगिताओं का उद्देश्य यह भी होता है कि अपने शारीरिक स्वास्थ्य की ओर ध्यान रहे और सिर्फ प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले नहीं बल्कि दूसरे भी कम से कम सैर या फिर हल्की कसरत से अपने शरीरों को चुस्त रखें तो बहरहाल इन इज्तिमाओं का असली उद्देश्य तो यह है कि हमें अपनी धार्मिक और संज्ञानात्मक क्षमताओं को उजागर करने की तरफ ध्यान हो।

सदर साहिब अंसारुल्लाह ने मुझे कहा कि ख़ुत्बा में अंसार को संबोधित कर के कुछ कह दें। अंसारुल्लाह की उम्र तो एक ऐसी उम्र है जो इंसान की सोच mature है पुख्ता होती है और खुद उन्हें अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास होना चाहिए और इन ज़िम्मेदारियों को ध्यान देना चाहिए। एक तो पुख्ता उम्र होना और दूसरे इन बड़ी आयु के लोगों की मजलिस का नाम अंसारुल्लाह होना प्रत्येक सदस्य को हर अहमदी पुरुष को जो चालीस साल से ऊपर है अपनी ज़िम्मेदारी के अदा करने का एहसास दिलाने के लिए काफ़ी है। यह ज़िम्मेदारी या उत्तरदायित्व क्या हैं जिन्हें एक नासिर को अदा करना चाहिए? उनका सारांश अंसारुल्लाह के अहद में बयान हो गया।

पहली बात यह कि हर नासिर, प्रत्येक सदस्य जो मजलिस अंसारुल्लाह का मेम्बर है इस्लाम की मज़बूती और अहमदियत पर सच्चे दिल से स्थापित होने की कोशिश करे और इस्लाम की मज़बूती के लिए कोशिश अपने ज्ञान और शक्ति से नहीं हो सकती। इस्लाम अल्लाह तआला का भेजा हुआ धर्म है और शिक्षा के मामले में सम्पूर्ण और पूर्ण धर्म है। इसमें किसी इंसान ने तो कोई और मज़बूती पैदा नहीं करनी है हाँ अपने आप को इस से मज़बूत संबंध बनाने की कोशिश की ज़रूरत है ताकि इस सही और पूर्ण धर्म का हम मज़बूत हिस्सा बन सकें और यह बात ख़ुदा तआला से संबंध के बिना पैदा नहीं हो सकती। इसके लिए हर अहमदी को कोशिश करनी चाहिए और अंसारुल्लाह की गुणवत्ता सब से उच्चतम होनी चाहिए। अल्लाह तआला से संबंध तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ संबंध न हो जिसके लिए अल्लाह तआला ने ख़ुद हमें आदेश दिया है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद और सलाम भेजो इस पर ध्यान दो । इसलिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का अधिकार अदा करना है। जब यह अधिकार स्थापित हो जाएगा तो तभी अहमदियत पर हम सच्चे दिल से स्थापित होंगे। इस ज़माना में अल्लाह तआला ने इस्लाम के सम्पूर्ण प्रकाशन के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है और अहमदियत पर सच्चे दिल से स्थापित होना तभी साबित होगा जब हम इस्लाम के प्रकाशन और इस्लाम के प्रचार में भरपूर भाग लेते हुए अपने आप को अंसारुल्लाह साबित करेंगे। अतः एक तो यह ज़िम्मेदारी है।

फिर आप ने, अंसार ने अपने अहद में एक अहद यह भी किया है या दूसरे शब्दों में इस ज़िम्मेदारी को निभाने का, उठाने का वादा और घोषणा की कि अहमदिया ख़िलाफत से वफ़ा का संबंध और उसकी रक्षा करने की कोशिश करेंगे। यह कोशिश कैसे होगी। यह प्रयास तभी होगा जब अंसार ख़लीफा के कार्यों और कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए इस के मददगार बनेंगे और यह तभी हो सकता है जब अंसार अपने आप को समय के ख़लीफा की बातों को सुनने की ओर आकर्षित रखेंगे और उसके लिए अल्लाह तआला ने हमें इस युग में एम.टी ए की नेअमत भी प्रदान की है कहीं दूर बैठे हुए सुना जा सकता है। अतः अंसारुल्लाह को अपने आप को इस के साथ जोड़ने की ज़रूरत है। इसी तरह भी यह भी अहद किया कि अपनी संतानों को भी ख़िलाफत को जोड़ेंगे तो और बाकी तरबिती बातों के अपनी संतानों को भी इस माध्यम से ख़िलाफत के साथ जोड़ दें ताकि नस्ल के बाद नस्ल यह वफाओं के सिलसिले चलते रहें और स्थिर रहें ताकि इस्लाम की सेवा और इस्लाम के प्रकाशन का काम हमेशा जारी रहे क्योंकि इस्लाम के प्रकाशन का काम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद आप की घोषणा के अनुसार कुदरते सानिया के माध्यम से होना है जो ख़िलाफत की प्रणाली है। अतः इसके लिए हर कुर्बानी के वादा पर नज़र रखें। यह वादा आप ने किया है कि हर कुरबानी आप करेंगे तो उस पर नज़र रखें।

अल्लाह तआला सब को उसकी ताकत प्रदान करे।

इसी तरह जैसा कि मैंने कहा कि लजना इमाउल्लाह का इज्तिमा भी हो रहा है। लजना इमाउल्लाह का भी एक अहद है जो उन्हें हमेशा अपने सामने रखना चाहिए। अल्लाह तआला का बड़ा फज़ल और दया है कि उसकी कृपा से लजना इमाउल्लाह की बहुमत माशा अल्लाह धर्म पर वफ़ा के साथ स्थापित है। आस्था के मामले में प्राय: मजबूत हैं लेकिन प्रत्येक लजना सदस्य को, हर अहमदी औरत को अपनी व्यावहारिक हालतों को भी इस गुणवत्ता पर लाना होगा जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की आज्ञा है।

जैसा कि मैंने कहा कि लजना इमाउल्लाह का भी एक अहद है और अपने फनगशनज़ों और इज्तिमाओं पर यह अहद दुहराती भी हैं कि हम अपने धर्म के लिए हर कुरबानी के लिए तैयार रहेंगी। तो पहली कुर्बानी जो धर्म मांगता है वह यह है कि अपनी सभी सांसारिक इच्छाओं को पीछे करके अपनी व्यावहारिक स्थिति को धर्म की शिक्षा के अनुसार बना लें। एक अहमदी महिला में सच्चाई की उच्च गुणवत्ता स्थापित होनी चाहिए। फिर स्त्रियों से संबंधित जो आदेश हैं उस पर अनुकरण करने की कोशिश है। महिला को अपनी पवित्रता और अपना सम्मान बचाने के लिए अल्लाह तआला ने जो बातें बताई हैं उन में पर्दा को बहुत महत्त्वपूर्ण बताया है। अगर इस में किसी अहमदी महिला में कमज़ोरी है तो वह व्यावहारिक रूप से अपने अहद को पूरा नहीं कर रही। इसलिए न समाज का भय, न ही अपनी सांसारिक इच्छाएं एक अहमदी को धर्म की शिक्षा से दूर करने वाली हो बल्कि हर अहमदी औरत को अपनी व्यावहारिक स्थिति को अल्लाह तआला की दी हुई शिक्षा के अनुसार गुज़ारने वाला होना चाहिए।

फिर एक वादा सच्चाई पर हमेशा स्थापित रहने का वादा है इस में हर एक को अपने मानकों को देखने की ज़रूरत है कि क्या हम सच्चाई की सच्ची भावना के साथ उस पर कायम हैं कि नहीं। इसी तरह औलाद की तरबियत का वादा है उसे भी भरपूर रूप में पूरा करने की कोशिश होनी चाहिए कि वह धर्म से जुड़े हैं कि नहीं। सर्वोच्च प्रशिक्षण स्थल बच्चा का उसकी माँ है अत: इसके लिए माताओं को भरपूर कोशिश करनी चाहिए। अगर यह ज़िम्मेदारी निभाने वाली हमारी सारी औरतें हों बल्कि हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया कि पचास प्रतिशत भी हो जाएं तो पीढ़ियों की सुरक्षा की वे गारंटी बन जाएंगी।

(लजना इमाउल्लाह ध्यान पूर्वक औरतों का सुधार करे, अन्वारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 296)

उनके धर्म को संवारने वाली बन जाएंगी। उनका ख़ुदा तआला से संबंध जोड़ने वाली बन जाएंगी। इसी तरह अपने बच्चों में अपने लोगों और देश के लिए कुरबानी की भावना पैदा करना भी माताओं का काम है और यह भी प्रतिज्ञा है। आपके वादा में शामिल है। उनके दिमाग़ों को पूरी तरह से नियमों के पालन के लिए तैयार करना माताओं का काम है। बुराई और अच्छाई में भेद पैदा करवाना माताओं का काम है। देश के विकास के लिए योगदान करने के लिए उसकी ओर ध्यान दिलाना माताओं का काम है। ख़िलाफत से बच्चों को जोड़ना और इसके लिए कोशिश करना जैसा बापों का काम है वैसा ही माताओं का भी काम है। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी हर माँ को समझनी चाहिए। अल्लाह तआला उन्हें भी तौफ़ीक़ प्रदान करे।

इसी तरह नासरातुल अहमदिया का इज्तिमा भी लजना के साथ हो रहा है नासरात भी वादा करती हैं उन्हें भी अपने अहदों को निभाना चाहिए। चौदह पंद्रह साल की उम्र होश की उम्र होती है और अच्छा बुरा समझने की उम्र होती है और यह आख़री उम्र है नासरात की और इस उम्र में ही बहुत सारी इच्छाएं भी होती हैं। अगर दुनिया की ओर दृष्टि हो तो सांसारिक इच्छाएं धर्म पर हावी हो जाती हैं। इसलिए हर अहमदी बच्ची को बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है और अपने वादा को बार बार दुहराते रहने की ज़रूरत है ताकि हर अहमदी बच्ची व्यर्थ सांसारिक इच्छाओं के पीछे चलने के स्थान पर उच्च लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास करने वाली हो और वह उच्च लक्ष्य नासरात के वादा में यह वर्णित हैं कि धर्म, राष्ट्र और देश की सेवा के लिए तैयार रहना। हमेशा सच्चाई पर कायम रहना। ख़िलाफत अहमदिया के लिए हर कुर्बानी के लिए तैयार रहना। तो अगर इस नियम को अपने जीवन का हिस्सा हमारी बच्चियां बना लें तो जहां अपनी जिन्दगियां बचा लेंगी वहां भविष्य की नस्लों के जीवन को भी सुरक्षित करने वाली होंगी और उन्हें ख़िलाफत से जोड़ने वाली होंगी। अल्लाह तआला उन्हें भी तौफ़ीक़ प्रदान करे और ये इज्तिमा जो हो रहे हैं उन्हें हर दृष्टि से बरकत वाला बनाए ।

इज्तिमा के संबंध में इस छोटी सी बात के बाद अब मैं एक प्रिय का उल्लेख करना चाहता हूँ जो पिछले दिनों हम से अलग हुआ। कुछ सप्ताह पहले एक दुर्घटना के परिणाम में एक प्रिय अलग हुआ था और कुछ दिन पहले एक और जामिया अहमदिया यू.के का एक बहुत प्यारा छात्र और युवा जो जामिया की शिक्षा लगभग पूरी कर चुका था कुछ समय बीमार रहने के बाद हम से अलग हुआ है। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

जिस बच्चे का मैं उल्लेख कर रहा हूँ उसका नाम मज़हर अहसन था। बीमारी की वजह से अंतिम वर्ष की परीक्षा नहीं दी थी लेकिन जैसा इस प्रिय युवक ने जीवन बिताया है वह मुरब्बी और मुबल्लिग़ ही था, परीक्षा पास करता है या न करता। अल्लाह तआला ने इस युवा के अंदर एक उत्साह पैदा किया हुआ था कि कैसे धर्म की सेवा करनी है। कैसे अपने आचरण और अपनी स्थिति को अल्लाह तआला की बताई हुई आज्ञाओं के अनुसार ढालना है और उस पर अनुकरण करना है। हर इंसान जो दुनिया में आया उसने एक दिन यहाँ से जाना है लेकिन भाग्यशाली होते हैं वे जो अपने जीवन को अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार ढालने की कोशिश करते हैं और इसमें सफल भी हो जाते हैं।

इस प्रिय के बारे में जामिया अहमदिया के छात्र, उसके दोस्त उस के शिक्षक मुझे लिख रहे हैं और यह केवल औपचारिक बातें नहीं हैं कि व्यक्ति मर गया तो उसका अच्छा उल्लेख करो बल्कि मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ कि वह ईमानदारी व वफा और आचरण का एक नमूना था। अल्लाह तआला उसके स्तर ऊंचा करता चला जाए। प्रिय स्वर्गीय माता पिता का इकलौता बेटा था उसकी दो बहनें माता पिता ने भी, विशेष रूप से मां ने धैर्य और अल्लाह तआला की ख़ुशी में ख़ुश होने का बेहतरीन नमूना दिखाया है। अल्लाह तआला उन्हें भी बदला दे और उन्हें धैर्य में बढ़ाता रहे। इन सब को अपनी तरफ से संतोष और धैर्य प्रदान करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह फरमाया कि

"याद रखो कि मुसीबत के घाव के लिए कोई मरहम ऐसा संतोष दायक आरामदायक और आराम देने वाला नहीं जैसा कि अल्लाह तआला पर भरोसा है।"

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 45)

अत: अल्लाह तआला पर ही हमेशा भरोसा होना चाहिए। प्रिय स्वर्गीय भी धैर्य और साहस की हिदायत करता हुआ इस दुनिया से विदा हुआ है। शोक और दु:ख तो होता है जो स्वाभाविक बात है और माता पिता भाई बहन को सबसे अधिक होता है लेकिन इस पीड़ा और दु:ख को दुआओं में ढाल कर हम मरहूम के स्तर की ऊंचाई और अपने लिए धैर्य और संतोष का माध्यम बना सकते हैं। अल्लाह तआला उनके करीबियों को भी इसकी तौफीक़ प्रदान करे। इसका कुछ उल्लेख मैं करता हूँ।

इस बच्चे को कैंसर हुआ था और अल्लाह तआला की कृपा से इलाज से ठीक भी हो गया था लेकिन बाद में उस की छाती में संक्रमण हुआ जिसका डॉक्टरों को पता नहीं चल सका जिसकी वजह से मृत्यु हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। मृतक के पड़दादा हज़रत मिस्त्री निज़ामुद्दीन साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे और उनके नाना प्रिय चौधरी मुनव्वर अली खान और दादा हाजी मंज़ूर अहमद साहिब दोनों दरवेशान कादियान में से थे। यह बच्चा जैसा कि मैंने कहा जामिया अहमदिया का छात्र था। यह बच्चा मूसी था।

कुछ बातें छोटी करूंगा क्योंकि लंबे विवरण में कुछ ऐसी भावनात्मक बातें हैं जिन्हें शायद वर्णन करना कठिन हो लेकिन बहरहाल संक्षेप में उल्लेख करता हूँ। उन की माता कहती हैं कि मुझे सलाह देने वाला, मेरा राज़दान और एक शिक्षक की तरह मुझे प्रशिक्षित करने वाला था। हम में माँ और बेटे के रिश्ते के साथ एक अनोखी किस्म की under standing भी थी वह मुझे अच्छी तरह समझता था और मैं उसको। उसे यह भी पता था कि मेरी माँ किन चीज़ों से ख़ुश होती है और किन से नफरत करती है। कहती हैं कि अक्सर वह मुझ से ख़िलाफत की प्रणाली, समय के ख़लीफा और जमाअत और सबसे बढ़कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा और आप के सच्चे आशिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातें किया करता था और यही topic उसे पसंद थे। अगर कोई सांसारिक बातें बीच में आ जाती तो थोड़ी देर बाद में वह कहता इन्हें छोड़ें हमारा उनसे क्या मतलब। उस की इच्छा थी कि इस साल जलसा में आए लेकिन उसे एहसास हो गया कि ज़रा मुश्किल हो जाएगा। इसलिए एम.टी.ए पर सुनना ही उचित समझा और बाकी घर वालों को भेज दिया कि आप लोग जाऐं मैं अकेला सुन लूंगा और manage कर लूँगा। आप चिंता न करें।(ग्लासगो में था) इस तरह घर वालों को उसने बीमारी के बावजूद भेजा कि आप जा कर जलसा सुनें। अपने सारे काम ख़ुद करने की

आदत थी और कहती हैं कि बीमारी के दौरान उसके स्वभाव में अधिक ठहराव और विश्राम आ गया था और कभी भी कोई चिड़चिड़ापन और क्रोध उस की तबीयत में नहीं देखा गया। जब यह पहली बीमारी जैसा कि मैंने कहा ख़ून का कैंसर था, उस से जब ठीक हो गया तो कमज़ोरी थी लेकिन अमीर साहिब स्कॉटलैंड से कहा कि मुझ से कुछ जमाअत के काम लें और इसके लिए उस ने फिर वहाँ न्यूज़ लेटर बनाना शुरू किया और फिर बाक़ी जो काम करने वाले थे उन से टच में रहता था उन्हें बताता रहता था कैसे काम करना है।

इसी तरह नासरात और लजना का स्कॉटलैंड का इज्तिमा था तो वहाँ उसने उनके लिए सन्दात डिजाइन कीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का नियमित अध्ययन करने वाला था। कहती हैं 12 सितम्बर को फिर जब उसको यह अन्य संक्रमण का हमला हुआ है (शायद यही दिन थे) कहती हैं मुझे बुलाया और कहा कि मेरे पास आकर बैठें और फिर कहने लगा कि अल्लाह तआला के फज़लों को अपनी उंगलियों पर गिनें और गिनना शुरू किया अल्लाह तआला के फज़लों को और फिर कहता है और गिनाएँ तो कहती हैं कि मैंने उससे कहा कि अल्लाह तआला के इतने फज़ल हैं कि मैं गिन नहीं सकती। उस पर मज़हर ने कहा कि बस आप को यही बताना चाह रहा था कि ख़ुदा तआला के फज़लों और उसके अहसानों को हमेशा याद रखें और उसका हर हाल में धन्यवाद करती रहें। कहती हैं मुझे समझ नहीं आया कि मज़हर किया कह रहा है लेकिन बहरहाल मानसिक रूप से तैयार कर रहा था।

कहती हैं कि तबशियर के मेहमान स्कॉटलैंड आए तो अंतिम काफिले के इन्चार्ज राजा बुरहान साहिब थे। मज़हर से मिले और बहुत ख़ुश हुए कि उस की सेहत अच्छी है। कहती हैं मैंने कहा मुरब्बी साहिब कि मज़हर को जमाअत के काम करने का बहुत जुनून है। हर समय योजना बनाता रहता है कि भविष्य में इस तरह मैं काम करूंगा, इस तरह काम करूंगा। मुरब्बी बनूंगा तो यह करूंगा।

जब इसे 2015 ई. के अक्टूबर में यह कैंसर की बीमारी diagnose हुई तो अपनी बहन को कहने लगा कि अम्मी को बहुत ध्यान से बताना। उन्हें मैं रोता नहीं देख सकता।

अस्पताल में नमाज़, तिलावत और एम.टी.ए पर ख़ुत्बा ज़रूर सुनता था। ऑन लाइन कार्यक्रम में नज़में तस्वीरें आदि सब देखता। सहपाठियों से बातें भी इस की होतीं शिक्षकों के साथ बातें होतीं। डॉक्टरों और नर्सज़ से जमाअत की तब्लीग़ की बातें करता अंत समय तक अस्पताल में अपनी teatment हमेशा बैठकर करवाई और डॉक्टरों को शान्ति सम्मेलन के संबंध के बारे में जमाअत के विभिन्न सक्रियताओं को लेकर हमेशा तब्लीग़ करता रहता था। यहां जलसा के बाद जो मुरब्बियों की बैठक होती है उस की कक्षा भी पास होकर जामिया कर के इस बैठक में शामिल हुई तो उन्हें उस ने लिख कर भेजा या संदेश दिया कि जो भी मीटिंग के बिन्दु हैं मुझे भी लिखकर भेजें ताकि मैं भी अपने जीवन का हिस्सा बनाऊँ क्योंकि मैं बैठक में शामिल नहीं हो सकता था। उसे ख़िलाफत से बेहद प्यार था और जब प्रिय रज़ा की मौत का अचानक पता लगा तो उसकी मां कहती हैं मैंने पहली बार इस तरह उसे रोते देखा है। पहले घबरा भी गई लेकिन बहर हाल उसे भी चिंता थी कि अचानक मृत्यु हुई है और माता पिता को भी और समय के ख़लीफा को भी बड़ा सदमा होगा।

कहती हैं हम अपने रब्ब से प्रसन्न हैं कि अल्लाह तआला ही के हैं और अल्लाह की बातें अल्लाह ही जाने, हमारा काम दुआ करना था। ख़ुदा का काम स्वीकार करना है करे या न करे। कहती हैं मज़हर जाते जाते भी हमारे सुधार कर गया। 13 सितम्बर ईद के दिन सुबह मज़हर को गंभीर खांसी थी उसने मुझे क़हवा बनाने के लिए कहा। बिस्तर पर जा कर लेट गया। जब जा के देखा तो बहुत सख्त बुख़ार था तेज़ बुख़ार था एमब्यूलैंस को बुलाया और उसने जाते-जाते फिर कहा कि ईद है आज आप लोग ईद पढ़ने जाएं और अस्पताल मेरे साथ आने की कोई ज़रूरत नहीं है थोड़ी देर बाद वहाँ से फोन करके आप को बुला लूँगा और मैं भी वहाँ जाकर अपने फोन में ईद का ख़ुत्बा सुन लूंगा। इस बीमारी में भी उसने इन बातों को याद रखा।

सुबह उसकी मौत हुई। मज़हर की आवाज़ अच्छी थी उसकी बहन ने अलार्म लगाया हुआ था सुबह नमाज़ या तहज्जुद का रिकॉर्ड किया हुआ था अपने फोन में और कहती हैं कि जब उसकी अंतिम सांस थी मृत्यु का समय हो रहा था उस समय इसी आवाज़ से एकदम फोन कॉल की आवाज़ शुरू हो गई जिस ने उस दिन और अधिक भावनात्मक कर दिया लेकिन बहरहाल अल्लाह तआला की यह इच्छा थी।

कई घटनाएं उन्होंने लिखी हैं। जब उसे कैंसर की बीमारी का पता लगा तो उसकी बहन अरूबा कहती हैं कि कहने लगा कि मैं सब कुछ सहन कर सकता हूँ लेकिन अपनी माँ को रोते हुए नहीं देख सकता इसलिए उन्हें सावधानी से बताना और उसका bone marrow हुआ और उसकी बहन का ही मैच कर गया तो उसे दिया गया और डॉक्टर भी हैरान थे। पहले कहते थे नहीं हो सकता लेकिन बहरहाल मैच कर गया और इस कारण से अल्लाह तआला ने उसे ठीक भी कर दिया था लेकिन बहरहाल अंतिम तकदीर यही थी। chemotherapy के दौरान भी डॉक्टरों को तब्लीग़ करता रहा। अल्लाह तआला पर बड़ा भरोसा था और किसी बात की चिंता नहीं थी। हमेशा यही कहता था कि अल्लाह तआला मुझे बर्बाद नहीं करेगा। बहरहाल अल्लाह तआला अब यहां से लेकर गया है तो इंशा अल्लाह अगली दुनिया में उम्मीद है उसकी इच्छाएं पूरी हो रही होंगी ।

डॉक्टर हफीज़ साहिब कहते हैं कि मैं मज़हर को कैंसर diagnose के बाद ग्लासगो मिलने गया तो उसे बहुत अल्लाह तआला पर भरोसा करने वाला इंसान पाया और वहां उनकी मां ने कहा कि यह हमेशा यह कहता है कि ख़ुदा तआला के परोपकार को हमेशा याद करते रहें। ग्लासगो से आदरणीया बेनज़ीर राफेअ साहिबा हैं कहती हैं मेरा श्रीलंका से संबंध है और उसकी मज़हर की मां और उनकी बेटियों के हमारे बड़े करीबी दोस्त हैं। जब कैंसर diagnose हुआ तो उनके परिवार से अधिक परिचय हुआ। उनसे मिलने के लिए अस्पताल गए तो बड़े आराम और धैर्य से अपनी बीमारी के बारे में बताया फिर जब इस बीमारी से कुछ समय बीच में ठीक हो गया तो ग्लासगो में पांच किलोमीटर की चैरिटी वॉक थी उसमें भी शामिल हुआ और कहता है यह तो बड़ी आसान थी मैंने बड़ी आसानी से कर ली हालांकि एक लंबी बीमारी से गुज़रा था chemotherapy आदि ख़ुद दर्दनाक प्रोसीजर है।

हाफिज फज़ल रब्बी साहिब कहते हैं कि कुरआन सीखने का बेहद शौक था बड़ी प्यारी और दर्द भरी आवाज़ में तिलावत किया करता था और जामिया आने से पहले भी राष्ट्रीय तालीमुल कुरआन कक्षा में शामिल होने के लिए अपने परिवार के साथ ग्लासगो से लंदन आया करते थे। कहते हैं कि कुछ आव्रजन की उनकी समस्याएं थीं। केस पास नहीं हो रहा था इस कारण जामिया में पढ़ने के बावजूद यहां लंदन से हर दो हफ्ते बाद ग्लासगो जाना पड़ता था तो मैंने उस को कहा कि तुम्हें बड़ी तकलीफ होती होगी तो कहने लगा किसी महान उद्देश्य के लिए छोटी छोटी तकलीफ कोई तकलीफ नहीं होतीं।

जामिया के एक शिक्षक वसीम फज़ल साहिब हैं वह कहते हैं कि मज़हर अहसन बहुत साहसी, गंभीर, चरित्र वाला ज़बरदस्त छात्र था। प्रिय की गिनती उन कुछ छात्रों में से होती थी जो अपनी ज़िम्मेदारी को बहुत ईमानदारी व निष्ठा और प्रेम से करते थे। प्रशासनिक मामलों में बहुत अच्छे थे। कहते हैं कि हमारे छात्रावास के प्रशासन में कई साल से बतौर prefect सेवा की तौफ़ीक़ पाते रहे। एक अवसर पर जब एक महत्त्वपूर्ण काम प्रिय को सौंपा जा रहा था तो किसी ने पूछा कि क्या प्रिय यह कर लेंगे इस पर एक शिक्षक ने प्रिय के बारे में टिप्पणी करते हुए कहा कि काम सौंपने के बाद तो हमें मज़हर से छुपना पड़ता है क्योंकि वह तो हम से अधिक चिंता गंभीरता और स्थिरता के साथ काम में व्यस्त हो जाता है। प्रिय के कौशल प्रबंध और निस्वार्थ सेवा का अंदाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कहते हैं कुछ साल पहले जामिया अहमदिया के वार्षिक खेल के अवसर पर प्रिय की ड्यूटी खाना खिलाने में लगाई गई। खेल के अंतिम दिन कई मेहमान तशरीफ़ लाते हैं और दोपहर खाने की व्यवस्था भी की जाती है। प्रिय ने इस अवसर पर सारी रात जाग कर सभी प्रशासनिक कार्यों में भरपूर भाग लिया और एक पल के लिए भी आराम नहीं किया। अगले दिन भी इसी ताज़गी के साथ सेवा में व्यस्त रहा। कार्यक्रम के बाद प्रिय ने इस विभाग से संबंधित एक विस्तृत और व्यापक रिपोर्ट भी तैयार की जो अभी भी प्रशासन के पास मौजूद है और इस रिपोर्ट के द्वारा इस विभाग के कामों में बहुत मदद मिल रही है।

हाफिज मशहूद साहिब कहते हैं कि कुछ समय पहले जब प्रिय से फोन पर बात हुई तो प्रिय ने बताया कि जल्द से जल्द स्वस्थ होकर बतौर मुबल्लिग़ के धर्म की सेवा करना चाहता हूँ। तथा कहा कि अब जबकि मेरा इलाज हो रहा है मैंने अपने स्थानीय जमाअत में काम करना शुरू कर दिया है। इसी तरह एक अवसर पर प्रिय ने उल्लेख किया कि वह ग्लास्गो में होने वाली पांच किलोमीटर चैरिटी वॉक में हिस्सा

ले रहा है जैसा कि मैंने बताया।

मलिक अकरम साहिब वहाँ के मुरब्बी सिलसिला रहे हैं थे उन्होंने लिखा कि मज़हर अहसन साहिब का परिवार जब दुबई से ग्लासगो शिफट हुआ तो विनीत स्कॉटलैंड में मुरब्बी के रूप में सेवा कर रहा था। जिस दिन यह परिवार ग्लासगो में आया उसी दिन मस्जिद में कोई फंगशन हो रहा था जिसमें यह परिवार भी सम्मिलित हुआ और हमने देखा कि मज़हर अहसन साहिब अभिवादन के बाद सीधे किचन में चले गए और किचन की टीम के साथ सभी काम मेहनत और परिश्रम से करते रहे। पहले दिन से लेकर जब तक वह जामिया अहमदिया में गए हमेशा मस्जिद और जमाअत की भरपूर सेवा करते रहे। बहुत कम बोलने वाले, परिष्कृत स्वभाव के मालिक, अन्दर बाहर से स्वच्छ थे। न कभी गपशप में शामिल हुए, न कभी समय बर्बाद किया। उन्हें समय के सही उपयोग का तरीका आता था। मुरब्बी सिलसिला होने के कारण से वह विनीत के बहुत क़रीब रहते और उन्हें विनीत ने बहुत बारीकी से देखा। उच्च नैतिकता के मालिक बड़े ही धीरे स्वर में बात करने वाले प्रत्येक से सम्मान करने वाले युवा थे। उनकी यह हार्दिक इच्छा और तड़प थी कि उनका वक्फ स्वीकार हो और जामिया अहमदिया में धार्मिक शिक्षा प्राप्त करके मुबल्लिग़ बनें और धर्म की सेवा करें और जिस दिन उन्हें जामिया में प्रवेश मिला उस दिन वह इतने ख़ुश थे कि मानो दुनिया जहान की ख़ुशी मिल गई है। ख़िलाफत से अत्याधिक प्रेम था।

अरशद महमूद साहिब कायद ग्लासगो लिखते हैं कि विनम्र शारजाह का कायद ख़ुद्दामुल अहमदिया चुना गया। पहले शारजाह में यह मज़हर अहसन भी वहीं थे कि शारजाह निवास के समय जमाअत के कार्यक्रमों और समारोहों के मौकों पर होने वाले ज्ञान वर्धिक और व्यायाम प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते देखा। कहते हैं जब शहर से बाहर दूर एक जगह हम इज्तिमा आयोजित करते थे तो हमें काफी पहले जा कर वकारे अमल और दूसरी तैयारी करनी पड़ती थी। मरहूम बावजूद छोटी उम्र के हमेशा आगे रहते। कहते हैं कि उन में बड़ी हिम्मत थी इस का वर्णन करते हुए कहते हैं कि एक बार कि उनकी इज्तिमा में तात्कालिक भाषण का मुकाबला हुआ। यह मुकाबला कठिन था शीर्षक भी मुश्किल था। तैयारी भी उनकी नहीं थी तो मज़हर ने भी भाग लिया और ख़ुद्दाम उनका भाषण सुन कर हंसने लगे मगर मज़हर अहसन ने अपने भाषण जिस तरह भी हो इसे पूरा किया और कोई परवाह नहीं की और फिर कहने लगा कि अगर इसी तरह में झिझक गया तो लाभ कोई नहीं होगा झिझक तो इसी तरह उतरती है और फिर कहता है कि हमें ख़ुद्दाम की प्रतियोगिताओं में गंभीर होना चाहिए। उसने कोई परवाह नहीं कि लोग हंस रहे हैं कि नहीं हँस रहे। उसने कहा झिझक दूर करने का एक ही तरीका है कि मैं बोलता चला जाऊँ जिस तरह भी मुझे आता है।

एक हमारे गेम्बियन मुरब्बी सिलसिला अब्दुर्रहमान चाम हैं जिन्होंने पिछले साल जामिया पास किया। वह कहते हैं कि जामिया के दौरान मज़हर के साथ काफी समय बिताया। जामिया के बाद हम वाट्स अप एप्लिकेशन के द्वारा संपर्क में रहे। कहते हैं कि विनम्र वह मैसेज प्रस्तुत करता है जो मज़हर साहिब ने विनीत को बीमारी के बाद भेजे। एक यह था कि मैं इस बीमारी से गुज़र रहा हूँ, लेकिन वास्तव में अल्लाह तआला ने मुझ पर बहुत अधिक उपकार किए हैं इस दृष्टि से मुझे ख़ुदा तआला का अधिक धन्यवाद करना चाहिए। इसलिए मैं इस दर्द से गुज़रना मुश्किल नहीं समझता। फिर एक यह है कि मैं बीमारी के बारे में अधिक नहीं सोच रहा बल्कि मैं अपने लक्ष्य को देख रहा हूँ और वह यह है कि जमाअत की किस रंग में उत्कृष्ट सेवा कर सकता हूँ।

उन के एक दोस्त और सहपाठी शेख समर हैं जो मुरब्बी बने कहते हैं हमेशा मुस्कुराते और लोगों को ख़ुश रखते। मज़हर अहसन प्रत्येक से एक जैसा व्यवहार करता जैसे वही बन्दा उसका दोस्त है। किसी को किसी भी प्रकार की दूरी का एहसास नहीं होने देता था और कभी किसी के साथ लड़ाई नहीं की। दिल बहुत बड़ा था। हर अवसर पर तब्लीग़ करता। तब्लीग़ का कोई भी मौका हाथ से न जाने देता। अस्पताल में था तो उधर भी बहुत मशहूर था कि मुसलमान है जो प्रत्येक को तब्लीग़ करता है। इस कारण से भी कभी किसी को चोट न पहुंची। कभी किसी को बुरा भला नहीं कहा। दूसरों की जितनी मदद कर सकता था इससे बढ़कर करता। हर छोटी बात का ध्यान रखता। प्रत्येक से प्यार और मुहब्बत के साथ रहता।

साहिल महमूद उनके सहपाठी, मुरब्बी हैं कहते हैं। ऐसे उत्कृष्ट व्यक्ति के साथ सात साल बिताने का मौका मिला है। असंख्य गुणों के मालिक थे जो बहुत कम में पाए जाते हैं। उच्च आतिथ्य, विनम्रता और विनय में उच्च नमूना। हमेशा अच्छी धारणा का प्रदर्शन करने वाले। हर काम में नेक इरादा। जामिया के शुरू के वर्षों में prefect थे। prefect का काम होता है कि समय पर लाइट बंद करके लड़कों को कहना कि सो जाओ। नमाज़ों के लिए जगाना, कमरे की सफाई का ध्यान दिलाना। कभी कोई झगड़ा हो जाता तो उसे रोकना। यह सब काम उन के थे और छात्र उन्हें तंग भी करते थे। कहते हैं हमें उन्हें तंग करने में बड़ा मज़ा आता था। कहते हैं एक बार विनीत ने कोई गलती कर दी जिस पर उन्होंने मुझे डांटा और फिर कुछ ही मिनटों के बाद मेरे पास आकर माफी मांगने लग पड़े और रो पड़े। बड़े नरम दिल इंसान थे। कहते हैं कभी मैं बीमार होता या किसी कारण से कोई तबियत ठीक नहीं होती और छुट्टी वाले दिन लेटा होता तो मेरे उठने से पहले मेरे बिस्तर के पास नाश्ता लाकर रख दिया करता और कभी नज़ला हुआ तो बिना पूछे मेरे लिए तुरंत गर्म पानी में शहद डाल कर ले आता और कहते हैं जो मेरे से मुलाकात होती उनका बड़े शौक से उल्लेख किया करता था। कहते हैं संक्षेप में विनीत ज़िन्दा दिल, निष्ठावान, नेक, धर्म का सच्चा मुजाहिद, आदर्श तक्वा वाला, मेहनती यह सभी शब्द मज़हर के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं। एक ख़ूबी यह थी कि जो कुछ अपने लिए पसंद करता वह अपने दोस्तों के लिए भी पसंद करता और खाने पीने के लिए जो कोई सामान लाता तो दोस्तों के लिए भी लेकर आता। सादगी से जीवन व्यतीत करता और फिज़ूल खर्ची करते बिल्कुल नहीं देखा जो जवानी की उम्र में कुछ लड़के करते हैं। सफाई का बहुत ख्याल रखने वाला और नमाज़ का और नमाज़े तहज्जुद की नियमित व्यवस्था करता। इस के सहपाठी कहते हैं कि मुझे भी उठाता। उन्होंने कमरे में एक जाए नमाज़ रखी हुई थी कहते हैं मैंने कई बार देखा है कि वह रात को उठकर नफिल अदा करता था। निरन्तर साप्ताहिक नफली रोज़े भी रखता और चंदे देने का बड़ा आयोजन करता। प्रत्येक चीज़ में बहुत क्रम था। अपने समय को बड़ी समझदारी से विभाजित करने वाला। जामिया की दैनिक शिक्षण के अतिरिक्त उनकी यह दिनचर्या थी कि कुरआन की नियमित तिलावत करे फिर जमाअत की पुस्तकों का कुछ अध्ययन करे फिर चाहे कैसा ही मौसम हो हर रोज़ व्यायाम करे नियमित अख़बार का अध्ययन करे और फिर दोपहर को कुछ आराम भी करे जो केवल कुछ मिनट का हो और फिर सोने से पहले नियमित डायरी लिखना। यह उस की विशेषताएं थीं और ख़ुत्बा जुम्अ: के नियमित नोटस लेता और फिर खुत्बा के नोटस को लेकर अपने दोस्तों में विचार विमर्श करता। यह कहते हैं कि ख़िलाफत अहमदिया और जमाअत अहमदिया का सच्चा फिदाई था और कभी समय के ख़लीफा या जमाअत की प्रणाली के ख़िलाफ कोई बात सहन नहीं करता था। हर तहरीक पर लब्बैक कहते दूसरों को भी याद कराते। अपने आप को समय के ख़लीफा का सिपाही समझते और बेशक थे। अक्सर कहा करते थे ख़िलाफत के लिए जान कुर्बान करने के लिए तैयार हूँ और फिर वह शब्द नहीं होते थे बल्कि भावनाओं से प्रदर्शित कर रहे होते थे कि वास्तव में करने वाला है वह जो कह रहा है। उस के दोस्त कहते हैं कि कैंसर ठीक हुआ तो हमें हौसला दिलाया कि परेशान मत हो बस ख़ुदा के आगे झुको ख़ुदा तआला पर विश्वास और भरोसा बहुत बड़ी चीज़ है। अपनी बीमारी को अपने ऊपर एक परीक्षा समझकर स्वीकार किया। उन्होंने कभी किसी के आगे परेशानी या असुविधा व्यक्त नहीं की।

उनके एक दोस्त मुरब्बी शरजील लिखते हैं। बहुत उच्च चरित्र वाले और प्यारे दोस्त थे। कई गुणों के मालिक विचार रखने वाले ख़िलाफत के स्थान को वास्तविक रूप में समझने वाले,अल्लाह तआला पर बहुत मज़बूत भरोसा था। जमाअत के लिए सब कुछ कुर्बान करने वाले थे। एक फिदाई थे। कभी किसी को चोट या नुकसान न पहुँचाते हर समय मुस्कुराते रहते कोई उन्हें कितना ही तंग करता कभी ग़ुस्सा नहीं दिखाते कभी जोश में नहीं आते। कभी व्यर्थ बातें नहीं कीं। लग़्व बातों से बचते आज तक कभी उन्हें बुरे शब्दों या निन्दा करते नहीं देखा। हर समय हर काम को बड़े धैर्य और उत्साह

से और बड़ी लगन और मेहनत से और बड़ी ज़िम्मेदारी से करते हैं। कभी किसी काम को छोटा नहीं समझते थे। प्रत्येक की मदद करते। सुस्ती का उनमें नाम तथा निशान भी नहीं था। जामिया से बहुत प्यार था। इच्छा शक्ति बहुत मज़बूत थी असुविधा के बावजूद हिम्मत नहीं हारी और अंत समय तक बड़ी हिम्मत से अपनी बीमारी को भी सहन किया। कहते हैं कभी किसी का मज़ाक नहीं उड़ाया बल्कि लोगों को इस से रोकते। इन में वे गुण थे जो एक मुरब्बी में पाए जाते हैं। इन के दोस्त तो कहते हैं कि मुमहदह से ही पूर्ण मुरब्बी थे तक्वा की बारीक राहों पर चलने वाले थे। छोटी छोटी बातों का ख्याल रखने वाले थे कि मेरे trimmer की आवाज़ भी ऊंची है इसलिए जब लोग सो रहे हैं तो मैं ट्रिम नहीं करता।

किसी प्रकार की बनावट नहीं थी। जैसे भीतर से थे वैसे ही बाहर थे। कथनी और करनी में समानता थी। कुरआन के आदेश से बंधे थे। नोटस तो उनके अच्छे थे ही लेकिन कुरआन के अनुवाद के नियमित नोटस बनाते थे। इसलिए उनका अनुवाद बहुत अच्छा था।

एक जामिया के छात्र आफाक मुरब्बी बन गए हैं। यहाँ प्रवेश किया तो यहां पाकिस्तान से आ के प्रवेश किया था। पहले वह कुछ समय जामिया पाकिस्तान में पढ़े तो यहाँ अपने माता पिता के साथ आ गए तो कहते हैं कि लोग मुझे मिलने आए तो मज़हर भी मिलने आए और दो मिनट के बाद चला गया और वापस आया तो उसके हाथ में बिस्तर और तकिया आदि थे कि तुम यह चीज़ें लेकर नहीं आए इसलिए मैंने दे दी हैं। तुम्हें इन चीज़ों की आवश्यकता होगी। यह कहते हैं कि हमारे कक्षा तीन महीने पहले प्रिय की तीमारदारी के लिए स्कॉटलैंड गई तो बहुत ख़ुश लग रहे थे। जब घर मिलने गए तो वहां पर नियमित भरपूर दावत की व्यवस्था की हुई थी और हमें ज़ोर देकर कह रहे थे कुछ न कुछ जरूर खाएं।

बहरहाल बेहद शरीफ और वक्फ की भावना को समझने वाला इंसान था और यद्यपि उसकी उम्र तो अल्लाह तआला ने अधिक मौका नहीं दिया छब्बीस साल की उम्र में मृत्यु हो गई लेकिन जहां भी अपने दोस्तों की तरबियत का मौका मिला तरबियत की। जहां मौका मिला प्रचार किया और बड़ा खुल के प्रचार किया, अंतिम समय में भी अपने सामने बैठे कुछ लिख के लगाया होता ताकि हर डॉक्टर और नर्स आने वाले इस को पढ़ें। जब भी दो तीन बार अस्पताल में और घर में बीमारी के दौरान फोन पर उनसे बात हुई तो बड़े हौसले से कहा करते थे बल्कि एक बार तो उनकी मां ने कहा कि उनके मुंह में दवाइयों के उपचार के कारण कुछ छाले पड़े हुए हैं और बोला नहीं जाता लेकिन जब मेरे से बात की तो सही तरह बोल रहा था। मैंने उससे कहा भी कि तुम आराम करो लेकिन बेहद ईमानदारी से कहने लगा नहीं अब मेरे छाले मुझे कोई परेशानी नहीं दे रहे और अल्लाह तआला ने फज़ल भी किया है उसके बाद वह छाले ठीक हो गए। तो बेहद विश्वास योग्य और अपने जीवन के उद्देश्य को समझने वाला अहमदी बच्चा था। अल्लाह तआला हमेशा उस पर रहमतें बरसाता रहे। उस के स्तर को ऊंचा करता रहे। हमेशा उस को हम ने अल्लाह तआला की रज़ा में राज़ी पाया। अल्लाह तआला उसे अपने प्रियजनों के क़दमों में जगह दे और ऐसे हज़ारों वाकफीन भी पैदा हों जो बारीकी से अपने लक्ष्य को समझने वाले हों और विशेष रूप से उन के माता पिता के लिए बहनों के लिए दुआ करें अल्लाह तआला उन्हें धैर्य और मनोबल में बढ़ाता चला जाए।

ख़ुत्बा सानिया के बाद हुज़ूर ने फरमाया

अब जुम्अ: की नमाज़ के बाद उनका नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा, मैं नीचे जाऊँगा दोस्त यहीं सफें ठीक कर लें।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 1 का शेष

ख़ुदा पर ईमान लाने की ताकीद है ऐसा ही उस के रसूलों पर भी ईमान की ताकीद है और मुतशाबेहात की यह निशानी है कि उनके ऐसे अर्थ मानने से जो मुहकमात के विरोधी हैं उपद्रव अनिवार्य आता है और साथ ही दूसरी आयतों जो प्रचुरता के साथ विरोद्ध में पड़ती हैं ख़ुदा तआला के कलाम में विपरीत अर्थ संभव नहीं इसलिए जो कम है बहरहाल उन्हें अधिक के अधीन करना पड़ता है और मैं लिख चुका हूँ कि अल्लाह तआला के शब्द पर विचार करना इस शंका को मिटा देता है क्योंकि ख़ुदा तआला के कलाम में अपने वर्णन में अल्लाह के शब्द का यह वर्णन है कि अल्लाह तआला वह ख़ुदा है जिस ने किताबें भेजी हैं और नबी भेजे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा कि वे उन स्तरों और पदों को प्राप्त कर लें जो रसूले करीम के पालन से लोगों को मिलेंगे क्योंकि जिन स्थलों तक रिसालत के नूर का पालन करने वाले पहुँच सकते हैं केवल अंधे नहीं पहुँच सकते और यह ख़ुदा की कृपा है जिस पर चाहे करे और जब कि ख़ुदा तआला ने अल्लाह नाम को अपनी सभी विशेषताओं और कार्यों का विशेषय ठहराया है तो अल्लाह के शब्द के अर्थ करने के समय क्यों इस ज़रूरी बात को ध्यान में न रखा जाए। हमें इससे कुछ उद्देश्य नहीं कि कुरआन शरीफ से पहले अरब के लोग अल्लाह के शब्द किन अर्थों में इस्तेमाल करते थे। मगर हमें इस बात की पाबंदी करनी चाहिए कि ख़ुदा तआला पवित्र कुरआन में अन्त से आख़िर तक अल्लाह के शब्द को इन्हीं अर्थों के साथ उल्लेख किया है कि वह रसूलों और नबियों और पुस्तकों के भेजने वाला और ज़मीन और आसमान का पैदा करने वाला विशेष विशेषण वाला और एकमात्र साझी रहित है। हां जिन लोगों को ख़ुदा तआला की वाणी नहीं पहुँची और वह बिल्कुल अनजान हैं उनसे उन के ज्ञान और बुद्धि और समझ के अनुसार पूछा जाएगा लेकिन यह कदापि संभव नहीं कि वह इन स्तरों ओर पदों को प्राप्त कर सकें जो रसूले करीम के पालन से लोगों को मिलेंगे। क्योंकि जिन स्थलों तक रिसालत के नूर का अनुकरण करने वाले पहुँच सकते हैं केवल अंधे नहीं पहुँच सकते और यह ख़ुदा की कृपा है जिस पर चाहे करे।

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22, पृष्ठ 172 -176)

☆ ☆ ☆

माली के रूप में सेवा के इच्छुक ध्यान दें।

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान के विभाग तज़ययुन के माली के पद पर नौकरी के लिए आवेदन चाहिए। जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में बतौर वित्तीय (स्थिति चतुर्थ) के ग्रेड में सेवा की इच्छा रखते हों वह निम्नलिखित शर्तों के अनुसार निवेदन दे सकते हैं।

(1) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है।

(2) उम्मीदवार की आयु 25 वर्ष से कम होनी चाहिए। बर्थ सर्टिफिकेट देना आवश्यक होगा।(3) वही उम्मीदवार सेवा के लिए उपयुक्त होगा, जो केंद्रीय समिति भर्ती कार्यकर्ताओं के इन्ट्रवियू में सफल होंगे।

(4) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिया जाएगा जो नूर अस्पताल कादियान के मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त होंगे।

(5) उम्मीदवार का कादियान आने जाने का सफर खर्च अपना होगा।

(6) यदि किसी उम्मीदवार का चयन होता है तभी उसे कादियान में अपने आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

(7) प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया से लिए जा सकते हैं। इस घोषणा के दो महीने के अंदर जो आवेदन आएंगे उस पर विचार होगा।

(नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं:

कार्यालय: 01872-501130 मोबाइल: 09815433760

e.mail: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 3 November 2016 Issue No. 35

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला का संक्षिप्त परिचय।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबेअ के देहान्त के बाद एक बार फिर अल्लाह तआला ने अपने वचन के अनुसार मोमनीन की जमाअत की भय की हालत को अमन में परिवर्तित कर दिया और जमाअत अहमदिया के पांचवें ख़लीफ़ा के तौर पर 22 अप्रैल 2003 ई. लंदन समय के अनुसार रात ग्यारह बज कर चालीस मिन्ट पर साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब को ख़िलाफ़त ख़ामेस: की बाबरकत पदवी पर आसीन फ़र्माया।

ख़िलाफ़त के चुनाव का यह ऐलान समस्त संसार की जमाअतों ने मुस्लिम टेलीविज़न इन्टरनेश्नल के सीधे प्रसारण द्वारा देखा तथा सुना।

23 अप्रैल 2003 ई. नमाज़ ज़ुहर तथा असर के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबेअ (रह) की इस्लामाबाद (टिलफ़ोर्ड़) में नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और इस्लामाबाद में ही आपकी तदफ़ीन हुई। जनाज़ा में लगभग बारह हज़ार लोग सम्मिलित हुए।

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला 15 सितम्बर 1950 ई. को हज़रत मिर्ज़ा मनसूर अहमद साहिब और हज़रत साहिबज़ादी नासिरा बेग़म साहिबा के घर रब्वा में पैदा हुए।

आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पड़पोते और हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब(र) के पोते और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिस्सानी (र) के नवासे हैं। आपका विवाह 31 जनवरी 1977 ई. को अमतुल सबूह बेग़म साहिबा से हुआ जो साहिबज़ादी अमतुल हकीम साहिबा की पुत्री हैं।

आपकी शिक्षा: मैट्रिक तक शिक्षा आपने तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल रब्वा से प्राप्त की और बी.ऐ. तालीमुल इस्लाम कॉलिज रब्वा से किया। 1976 ई. में एगरी करचरल यूनीवर्सिटी फ़ैसलाबाद से एम.एस.सी. की डिगरी प्राप्त की।

धर्म सेवा

1977 ई. में आपने अपना जीवन वक्फ कर दिया और अगस्त 1977 ई. में नुसरत जहाँ स्कीम के अन्तर्गत घाना तशरीफ़ ले गए। वहाँ 1985 ई. तक अहमदिया सकैन्ड़री स्कूल के प्रिसीपल रहे। 1985 ई. में पाकिस्तान वापिस लौटे और 17 मार्च 1985 ई. से उप वकीलुलमाल सानी नियुक्त हुए । 18 जून 1994 ई. को आपकी नियुक्ति नाज़िर तालीम सदर अन्जुमन अहमदिया के तौर पर हुई। 10 दिसमबर 1997 ई. को नाज़िर आला व अमीर मुक़ामी नियुक्त हुए। अगस्त 1998 ई. में सदर मज्लिस कारपरदाज़ नियुक्त हुए। नाज़िर आला की हैसियत से आप नाज़िर ज़ियाफ़त (आतिथ्य) और नाज़िर ज़िराअत (कृषि) भी सेवा करते रहे। 1994 ई. से 1997 ई. तक चेयरमैन नासिर फ़ाऊंड़ेशन रहे। इसी समय में आप सदर तज़ईन (सजावट) कमेटी रब्वा भी थे। 1988 ई. से 1995 ई. मेम्बर क़ज़ा (न्याय) बोर्ड रहे। ख़ुद्दामुल अहमदिया रब्वा में वर्ष 76-77 ई. में मुहतमिम सेहत, 84-85 ई. में मुहतमिम तजनीद, 85-86 ई. और 88-98 ई. में मुहतमिम मजालिस बैरून (बाहरी) और 89-90 ई. में नायब (उप) सदर (प्रधान) ख़ुद्दामुल अहमदिया रहे। अन्सारुल्लाह पाकिस्तान में क़ाएद ज़िहानत और स्वास्थ्य और क़ाएद तालीमुल क़ुर्आन 95-97 ई. रहे। 1999 ई. में एक मुक़द्दमें में असीर राहे मौला रहने का सम्मान भी प्राप्त किया। 30 अप्रैल को गिरफ्तार हुए और 10 मई को आज़ाद हुए। 22 मई 2003 ई. को जमाअत के पाँचवें ख़लीफ़ा बने। अल्लाह तआला आपकी आयु और सेहत में बरकत अता फ़र्माए और पल-पल आपकी सहायता फ़र्माए । आमीन !

☆ ☆ ☆

मस्नवी मौलाना रूम की एक कहानी

अक्लमन्दों की सुहबत

मौलाना रूम ने अपनी मस्नवी में कहानी के रूप में बहुत सारी शिक्षा देने वाली बातें वर्णन की हैं। आप की एक कहानी पाठकों के लिए प्रस्तुत है। सम्पादक)

एक तुर्क घोड़े पर सवार चला आ रहा था। उसने देखा कि एक सोते हुए मनुष्य के मुंह में एक सांप घुस गया। सांप को मुंह से निकालने की कोई युक्ति समझ में न आई तो मुसाफिर सोने वाले के मुंह घूंसे लगाने लगा। सोने वाला गहरी नींद से एकदम उछल पड़ा। देखा, एक तुर्क तड़ातड़ घूंसे मारता जा रहा है। वह मार को सहन न कर सका और उठ कर भाग खड़ा हुआ। आगे-आगे वह और पीछे-पीछे तुर्क। एक पेड़ के नीचे पहुंचे। वहां बहुत से सेव झड़े हुए पड़े थे। तुर्क कहा, "ऐ भाई! इन सेबों में से जितने खाये जायें, उतने तू खा। कमी मत करना।"

तुर्क ने उसे ज्यादा सेव खिलाये कि सब खाया-पिया उगल-उगलकर मुंह से निकालने लगा। उसने तुर्क से चिल्लाकर कहा, "ऐ अमीर! मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था तू मेरी जान लेने पर उतारू हो गया? अगर तू मेरे प्राणों का ही गाहक है तो तलवार के एक ही वार से मेरा जीवन समाप्त कर दे। वह भी क्या बुरी घड़ी थी जबकी मैं तुझे दिखाई दिया।"

वह इसी तरह शोर मचाता और बुरा-भला कहता रहा और तुर्क बराबर मुक्के-पर मुक्का मारता रहा। उस आदमी का सारा बदन दुखने लगा। वह थककर चूर-चूर हो गया। लेकिन वह तुर्क दिन छिपने तक मार-पीट करता रहा, यहां तक कि पित्त के प्रकोप से उस आदमी का अब बार-बार बमन होनी शुरु हो गयी। सांप वमन के साथ बहार निकल आया।

जब उस ने अपने पेट से सांप को बाहर निकलते देखा तो डर के कारण थर-थर कांपने लगा। शरीर में जो पीड़ा घूंसों की मार से उत्पन्न हो गयी थी, वह तुरन्त जाती रही।

वह आदमी तुर्क के पैरों पर गिर पड़ा और कहने लगा, "तू तो दया का अवतार है और मेरा परम हितकारी है। मैं तो मर चुका था। तूने ही मुझे नया जीवन दिया है। हे मेरे बादशाह, अगर तू सच्चा हाल ज़रा भी मुझे बता देता मैं तेरे साथ ऐसी अशिष्टता क्यों करता है? परन्तु तूने अपनी खामोशी से मुझे हैरान कर दिया और बिना कारण बताए बदन पर घूंसा मारने लगा। हे परोपकारी पुरुष! जो कुछ गलती से मेरे मुंह से निकल गया, उसके लिए मुझे क्षमा करना।"

तुर्क ने कहा, "अगर मैं इस घटना का जरा भी संकेत कर देता तो उसी समय तेरा पित्त पानी हो जाता और डर के मारे तेरी आधी जान निकल जाती। उस समय न तुझ में इतने सेब खाने की हिम्मत होती और न उल्टी होने की नौबत आती है। इसलिए मैं तो तेरे दुर्वचनों को भी सहन करता रहा और कारण बताना उचित नहीं था और तुझे छोड़ना भी मुनासिब नहीं था। ताकि तेरी जान बच जाए।

(बुद्धिमानों की शत्रुता भी ऐसी होती है कि उनका दिया हुआ विष भी अमृत हो जाता है। इसके विपरीत मूर्खों की मित्रता से दु:ख और पथ-भ्रष्टता प्राप्त हाती है।)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad